शांति और विकास की शिक्षा – एक संयुक्त विचारणीय मुद्दा

जितेन्द्र लोढ़ा*

शांति, मानवता के अस्तित्व एवं उसके संस्कार-युक्त विकास के लिए पूर्व अपेक्षित प्रतिमान है। इसलिए अपने सनातन स्वरूप में शांति और विकास संयुक्त विचारणीय घटक हैं, जो परस्पर संबंधित होते हुए, अपनी उत्कृष्टता के लिए शिक्षा के आश्रित चर हैं। चूँकि शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है, जिसके कन्धों पर आवश्यक व समुचित मानवता को प्रबंधित करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इस दृष्टि से अपने प्राकृत स्वरूप में शांति, विकास एवं शिक्षा के मध्य परस्पर निर्भरता वाले संबंध कायम हैं, जिसके चलते आज समाज में द्वन्द्वों का परिमार्जन, बिगाड़-रहित विकास, परस्पर निर्भरता, वाद-विवाद सुलझाने के प्रशिक्षण, लोकतंत्र एवं मानवाधिकार जागरूकता के साथ-साथ वैश्विक आवश्यकताओं एवं परिवर्तनों के अहसास जैसे ज्ञानत्मक पक्षों को रेखांकित करने की जिम्मेदारी "शांति और विकासयुक्त-शिक्षा" की है। अतः दिन के उजाले की तरह साफ है कि 'शांत्युक्त-विकास' और 'विकासयुक्त-शांति' की स्थापना के लिए "शांति व विकासयुक्त शिक्षा" एक प्रकार से अपने बहु-अनुशासनिक स्वरूप में बिगाड़, अशांति व उत्पादकता का सम्यक् प्रबंधन है, जिसका लक्ष्य शांत, सुखी व समृद्ध मानवता का उदय करना है। अतः इस दिशा के समावेशी मंच उत्कृष्ट शैक्षिक मानकों को गढ़ने के लिए स्वागत योग्य प्रकल्प है।

पृष्ठभूमि

शांति और विकास, वर्तमान के मानव जीवन की सर्वाधिक अपेक्षित विषय-वस्तु है। शांति व समरसता सहित जीवन पृथ्वी पर संस्कार युक्त विकास की एक सर्वकालिक आवश्यकतापरक अवधारणा है, जिसका महत्व कभी समाप्त नहीं होगा। शांति के लिए शिक्षा नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों, दृष्टिकोणों और कौशलों के पोषण पर बल देती है, जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामंजस्य बिठाने के लिए आवश्यक है। हम सभी जानते हैं कि

* *व्याख्याता-शिक्षा*, आर.एल. सहरिया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कालाडेरा (जयपुर) राजस्थान 303801

पृथ्वी पर जीवन का आधार सह-अस्तित्व, सहकार, सहिष्णुता, समानता, न्याय, द्वंद्वों का परिमार्जन एवं संस्कार युक्त पारिस्थितिक संतुलनों का सम्मान करने जैसी प्रवृत्तियां हैं, और इन प्रवृत्तियों की स्थापना का मूल आधार है, शांत्युक्त-विकास। चूंकि शिक्षा मानवीय जीवन की वो अमूल्य निधि है, जिसका अवलम्ब लेकर हम अपनी आवश्यकताओं एवं सन्तुलित जीवन का मार्ग निर्मित कर सकते हैं। इसलिए शांति और विकास की स्थापना का कार्य भी अपने सनातन व सर्वकालिक रूप से शिक्षा का अभिप्रेत है।

आई.ई.पी., जो अर्थशास्त्र और शांति के लिए गैर लाभकारी वैश्विक अनुसंधानात्मक संगठन है, का सिद्ध रूप में मानना है कि "शांति, मानवता के अस्तित्व एवं उसके सतत् विकास के लिए एक पूर्व अपेक्षित प्रतिमान है। इसलिए शांति और विकास संयुक्त विचारणीय घटक हैं, जो परस्पर संबंधित होते हुए भी अपने प्रगाढ़ संबंधों व उत्कृष्टता के लिए शिक्षा के आश्रित चर हैं।"[1] देखा जाए तो यह सत्य भी है, जहां एक ओर शिक्षा, शांति के लिए भावी पीढ़ी में उन ज्ञान मूल्यों, व्यवहारों, कौशलों एवं अभिवृत्तियों का विकास करती है, जिनसे वैयक्तिक व सामूहिक मानवता में व्यापक के लिए संकीर्णता को त्यागने की प्रवृति, प्रकृति व संस्कृति के मध्य संतुलन बैठाने के प्रयास एवं संस्कार युक्त विकास को बल मिलता है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा, विकास के लिए राष्ट्र को भौतिक व मानवीय साधनों के योग्य, सक्षम एवं गुणात्मक बनाकर, आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण आधार तैयार करती है। इस संबंध में 'डेलॉर्स आयोग' द्वारा बड़ी सामयिक टिप्पणी की गयी है-"शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है, जिसमें मानव के विकास का सुसंगठित स्वरूप पनप सके तथा जिससे गरीबी, अलगाव, अज्ञान, शोषण एवं युद्ध की स्थितियों का निराकरण हो सके, इसलिए शांति, धैर्य एवं सहास प्रदान करना, शिक्षा की जिम्मेदारी है।"[2]

21 सितम्बर 2013 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने अन्तर्राष्ट्रीय शांति दिवस घोषित किया, जिसका विषय "शांति के लिए शिक्षा" रखा गया था। विशेषकर यह दिवस शांति व शिक्षा को समर्पित किया गया है। युनेस्को द्वारा नव स्थापित संस्थान 'महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन फॉर पीस एण्ड सस्टेनेबल डवलपमेन्ट (MGIEP), अपनी दिशा का एक विशिष्ट प्रकार का संस्थान है, जो विश्व का वह अग्रगामी संस्थान है, जिसमें शांति व सतत् विकास की धारणाओं एवं मूल्यों को संयुक्त व समावेशित रूप में, शिक्षा के माध्यम से स्थापित करने पर न केवल बल दिया जाता है, बल्कि इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य दर्शन भी यही है। यह संस्थान वर्तमान में चार क्षेत्रों पर कार्य कर रहा है। प्रथम, यह संस्थान सदस्य देशों को शांति व सतत् विकास के लिए सलाह, सहायता, वाद-विवाद एवं विवेचनात्मक निष्कर्षों के लिए मंच प्रदान करता है। द्वितीय, शांति व विकास के शैक्षिक क्षैत्रों की भूमिका व पाठयक्रम रेखांकित कर, स्थापना में मदद करता है। तृतीय, शांति व सतत् विकास की बिल्डिंग कैपेसिटी के क्षेत्र में अनुसंधानों एवं आयोजनाओं को दिशा प्रदान करना, और अपनी चतुर्थ भूमिका में यह संस्थान, शांति व सतत् विकास की दृष्टि से विभिन्न दिशापरक सहभागिताओं, संगठनों एवं जुड़ावों को प्रबंधित कर, विश्व में शांति व सतत् विकास की संयुक्त व समावेशित शिक्षा का

प्रसार करता है।[3] वैश्विक स्तर पर इस प्रकार के संस्थानों की स्थापना का बढ़ता प्रचलन, शांति और विकासयुक्त शिक्षा को एक संयुक्त विचारणीय मुद्दे के रूप में मान्यता प्रदान कर, इनके समावेशित स्वरूप की सार्थकता प्रकट कर रहा है।

शिक्षा तो अपने प्राकृत स्वभाव से शांति व विकास का घटक है। प्रसिद्ध बाल मनोविज्ञानी मरिया मॉन्टेसरी ने तो यहां तक कहा कि "सभी शिक्षा शांति के लिए है।" इस संबंध में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जॉनसन का कहना है कि "शिक्षा अन्य पूंजियों की तरह एक पूंजी है, क्योंकि इसका लक्ष्य ऐसी जनशक्ति प्रदान करना है, जिसकी सहायता से भौतिक पूंजी अर्जित की जा सकती है।"[4] इसी प्रकार टी.डब्ल्यू. शुल्ज का भी यही कहना है कि "आर्थिक विकास के लक्ष्य हेतु, पूंजी हो, भूमि हो, भौतिक प्रसाधन उपलब्ध हों किन्तु किसी कारीगर को अपने व्यवसाय का तकनीकी ज्ञान उपलब्ध न हो, स्थानीय व्यवस्था व पर्यावरण का ज्ञान न हो, साक्षर न हो तो उत्पादन में कमी होना स्वाभाविक है।"[5] इस प्रकार स्पष्ट है कि शांति व विकास दोनों घटक मानव पूंजी के प्रतिफलन है और सम्यक् मानव पूंजी के निर्माण का आधार है, 'शिक्षा'। अमेरिका के बहुत बड़े आर्थिक चिन्तक प्रो. गालब्रिथ ने अपनी पुस्तक "द ऐफलुएन्ट सोसाइटी" में लिखा है कि "अमेरिका के लोग अब समझ गये हैं कि केवल भौतिक वस्तुओं में पूंजी लगाना बुद्धिमानी नहीं है। मनुष्य व मानवता के विकास में पूंजी लगानी चाहिए। मनुष्यों में वांछित व सम्यक गुणों का विकास करना चाहिए। इससे समाज का भला होगा, दुनिया का भला होगा।"[6]

इस प्रकार स्पष्ट है कि शांति और विकास (बिगाड़-रहित) की शिक्षा एक प्रकार से सह-अनुशासनिक (Co-discipline) अवधारणा है। दोनों के संयुक्त प्रभाव से समाज में द्वंद्वों का परिमार्जन, बिगाड़-रहित विकास, परस्पर निर्भरता, वाद-विवाद सुलझाने का प्रशिक्षण, लोकतंत्र व मानवाधिकार जागरूकता, विश्व परिवर्तन की दृष्टि के भान जैसे ज्ञानात्मक पक्षों का विकास होगा। शांति, विकास और शिक्षा तीनों की परस्पर-निर्भरता के कारण ही आज शान्ति और विकासयुक्त शिक्षा का उदय हुआ है। इस प्रकार शांति व विकासयुक्त शिक्षा, एक प्रकार से अपने बहु-अनुशासनिक स्वरूप में बिगाड़, अशांति व उत्पादकता का सम्यक् प्रबंधन है, जिसका लक्ष्य शांत, सुखी व समृद्ध मानवता का उदय करना है। विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को देखकर लगता है कि शांत-सहवास व संस्कार-युक्त विकास (Sustainable Development) की आज तीक्ष्ण आवश्यकता है, इसलिए शांति और विकासात्मक शिक्षा का संयुक्त-चिन्तन, वर्तमान की महती आवश्यकता है।

शांति, विकास एवं शिक्षा के परस्पर फलनीय संबंध

शांति, विकास एवं शिक्षा तीनों चर परस्पर निर्भरता वाले हैं, तीनों पृथक-पृथक रूप से एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं। शांति, शिक्षा और विकास की फलन है, पर इस दिशा की शर्त यह है कि शिक्षा शांत्युक्त-मूल्यों पर आधारित हो तथा विकास बिगाड़-रहित हो, तब शांति व शिक्षा तथा शांति व विकास के मध्य धनात्मक फलनात्मक संबंध पाये जायेंगे, यही आदर्श स्थिति है। विकास,

शांति व शिक्षा का फलन है, विकास के इन दोनों चरों के साथ धनात्मक फलनात्मक संबंध है। इसी प्रकार शिक्षा स्वयं भी शांति व विकास की धनात्मक फलन है। शांति, विकास व शिक्षा के फलनीय संबंधों को अग्र रेखाचित्रों से स्पष्ट किया जा रहा है।

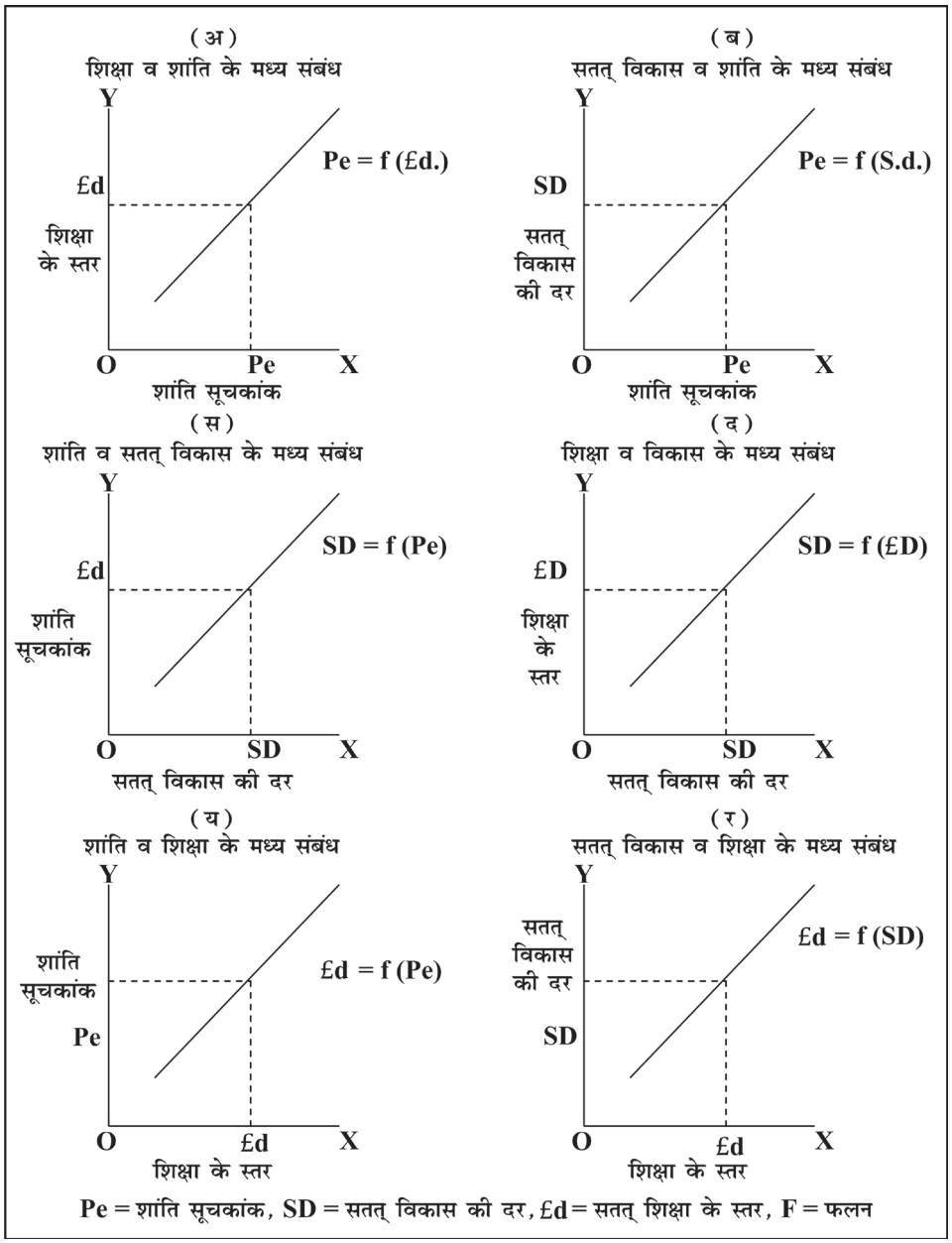

रेखाचित्रों से स्पष्ट है कि शांति, विकास और शिक्षा तीनों के मध्य परस्पर धनात्मक संबंध है, और ऐसा व्यवहार में भी परिलक्षित है। अफगानिस्तान, मिश्र, लीबिया, नामीबिया एवं सोमालिया जैसे देशों में अशांत पर्यावरण के चलते न शिक्षा है और न ही विकास है। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान के दो बड़े उत्पादकीय नगर अशांति की भेट चढ़ गये। तृतीय विश्व के अनेक राष्ट्र शिक्षा की कमी के कारण अशांत व पिछड़े हुए हैं। विकसित राष्ट्रों के विकास के पीछे शिक्षा व स्थिरता का हाथ है। यदि हम शांति और विकास की शिक्षा को एक संयुक्त एजेंडा मानकर इस दिशा के पाठ्यक्रम व कार्यक्रमों को निर्धारित करें, तब हम इन तीनों अवधारणाओं के एकीकृत लाभों को ले सकेंगे, क्योंकि अन्ततोगत्वा इन तीनों चरों का लक्ष्य तो मानवता का विकास करना ही है, फिर क्यों न हम इन तीनों को परस्पर विकास की दृष्टि से संयुक्त नज़रिये से देखें।

शांति एवं विकासयुक्त शिक्षा का संयुक्त अनुशासनिक स्वरूप

शांति और विकास की शिक्षा, वो शैक्षिक अवधारणा है, जो अपने उद्देश्य, विषय-वस्तु एवं व्यूह-रचना को शांति और विकास के मुद्दों पर परिभाषित करती है। शिक्षा द्वारा स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय द्वंद्वों, पूर्वाग्रहों एवं पक्षपातों को हटाने, समानता एवं न्यायिक प्रशिक्षण, पर्यावरण-बिगाड़ से बचाव, आर्थिक असमानताओं को दूर करना, वैश्वीकरण की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं से निजात दिलाना शांति और विकास की दृष्टि से सतत् मानवीय विकास का प्रशिक्षण देना, मानवाधिकार, निरस्त्रीकरण एवं लोकतंत्र के आवश्यक कौशलों का विकास करना, विवाद सुलझाने का प्रशिक्षण देना, राजनैतिक एवं व्यावसायिक नैतिकता स्थापित करने जैसे अनेक घटकों को अपनी विषय-वस्तु में शामिल किया जाता है, तब जाकर वह शिक्षा, शांति व विकासयुक्त शिक्षा का संयुक्त अनुशासनिक स्वरूप लेगी।

संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान तथा सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) का मानना है कि शांति और विकास की शिक्षाओं के संयुक्त चिन्तन से शांति और विकास की अनेक समस्याओं का स्वतः समाधान हो जाएगा, क्योंकि दोनों शिक्षाओं के उद्देश्य, अवधारणाएं एवं विषय-वस्तु लगभग एक जैसी व अन्तर्संबंधित हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2001 से 2010 के दशक को 'डिकेड ऑफ पीस' के रूप में घोषित किया, इसी प्रकार वर्ष 2005 से 2014 को 'डिकेड ऑफ एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डवलपमेन्ट' के रूप में घोषित किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित इन दोनों दशकों की गतिविधियों एवं लक्ष्य, उन विचारों व मूल्यों को समर्पित हैं, जिससे विश्व में शांति व संस्कार युक्त विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। इस प्रकार स्पष्ट है कि शांति और विकास की शिक्षा के मुद्दों को यदि संयुक्त रूप से लागू किया जाए तो शांत्युक्त विकास और विकासयुक्त शांति की स्थापना स्वतः हो जाएगी। शांति और विकास की शिक्षाओं के संयुक्त अनुशासनिक अर्थात् उसके समावेशी स्वरूप की विषय-वस्तु को अग्र चित्र से स्पष्ट किया जा रहा है।

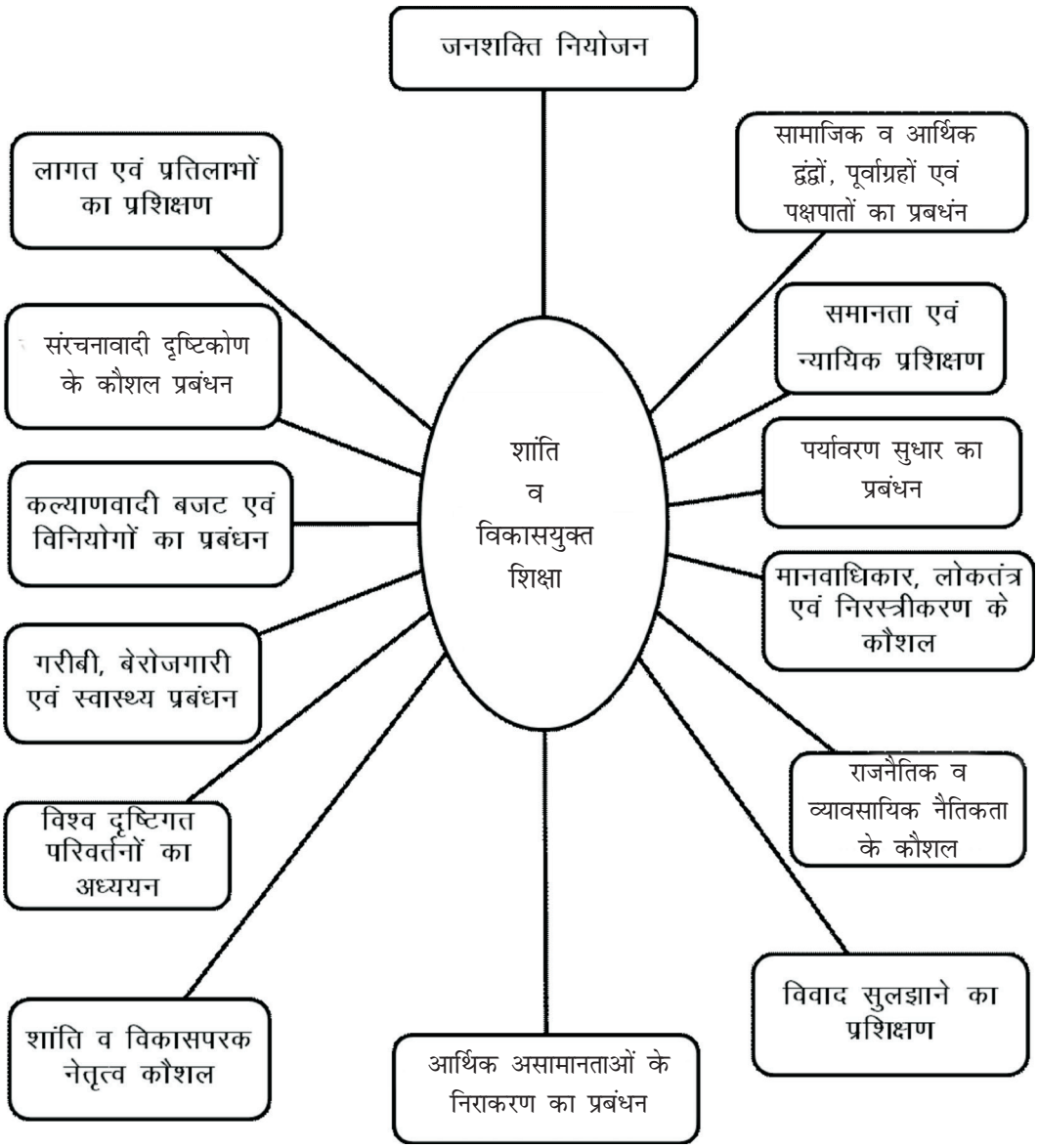
जनशक्ति नियोजन
लागत एवं प्रतिलाभों का प्रशिक्षण
संरचनावादी दृष्टिकोण के कौशल प्रबंधन
कल्याणवादी बजट एवं विनियोगों का प्रबंधन
गरीबी, बेरोजगारी एवं स्वास्थ्य प्रबंधन
विश्व दृष्टिगत परिवर्तनों का अध्ययन
शांति व विकासपरक नेतृत्व कौशल
शांति व विकासयुक्त शिक्षा
आर्थिक असामानताओं के निराकरण का प्रबंधन
सामाजिक व आर्थिक द्वंद्वों, पूर्वाग्रहों एवं पक्षपातों का प्रबधंन
समानता एवं न्यायिक प्रशिक्षण
पर्यावरण सुधार का प्रबंधन
मानवाधिकार, लोकतंत्र एवं निरस्त्रीकरण के कौशल
राजनैतिक व व्यावसायिक नैतिकता के कौशल
विवाद सुलझाने का प्रशिक्षण

रेखाचित्र में वर्णित मुद्दों को केन्द्र में रखकर, शिक्षा को शांति और विकास की सहचरी बनाया जा सकता है। इस प्रकार के सभी मुद्दों को स्थानीय से लेकर वैश्विक समाजों में प्रसारित व प्रतिस्थापित करने की जिम्मेदारी शांति एवं विकासयुक्त शिक्षा एवं उसके पैरोकारों की है। इसलिए हम कह सकते हैं कि शांति व विकास की शिक्षाओं के समावेशित स्वरूप से भावी पीढ़ी में ऐसे ज्ञानात्मक, कौशलात्मक एवं अभिवृत्तियात्मक पक्षों का विकास किया जा सकता है, जिससे समाज में सर्वकल्याण के वातावरण को बल मिलेगा और यह सच भी है कि लोग शिक्षा के माध्यम से अक्षमता पर काबू पाते हैं, अधिक समानता, धन और दर्जा पाते हैं, जिसके चलते शांति व विकास के मार्ग स्वतः ही खुल जाएंगे, अतः हमें दोनों चरों की शिक्षा के समावेशी स्वरूप का स्वागत करना चाहिए।

शांति और विकासयुक्त शिक्षा के क्रियात्मक पक्ष

शांति और विकासयुक्त शिक्षा के क्रियात्मक क्षेत्र में अहम् भूमिका शिक्षा तंत्र, सरकार, विधि एवं प्रशासनिक संगठन, मीडिया एवं गैर-सरकारी संगठनों की है। शांति और विकास के प्रचार-प्रसार में विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, शिक्षक एवं विद्यार्थी, जो अपने आप में एक बहुत बड़ा वर्ग है, मुख्य एवं नेतृत्वगामी भूमिका अदा कर सकता है। इसके अलावा राष्ट्रीय एवं वैश्विक संगठन जैसे यू.एन.ओ. और उसके सहयोगी संगठन प्रत्येक राष्ट्र के अपने-अपने लक्ष्यपरक संगठन यथा भारत के संदर्भ में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, यू.जी.सी., एन.सी.ई.आर.टी., विश्वविद्यालय एवं शिक्षा बोर्ड आदि इस दिशा की आयोजना एवं क्रियान्विति सुनिश्चित करने के मुख्य अभिकरण हैं। इस संबंध में आधुनिक समष्टि अर्थशास्त्र के जनक जॉन मेनार्ड कीन्स का यह कहना दिशापरक है कि "किसी भी अर्थव्यवस्था का विकास वहां की नीतियों, सरकार एवं जनता की सोच-समझ पर निर्भर करता है। यदि उस देश की जनता को सम्यक् रूप से वांछित सिद्धान्तों के प्रयोग के लिए शिक्षित व प्रशिक्षित नहीं किया गया तो वहां आर्थिक विकास की सम्भावनाएँ क्षीण होती हैं। क्योंकि अर्थव्यवस्था कभी स्वचालित नहीं होती, उसका संचालन, उस राष्ट्र की जनता व सरकार की आर्थिक समझ व तदनुरूप निर्णयों के स्तर पर निर्भर करता है।"[7]

शांति व विकासयुक्त शिक्षा ही अपने सह-अनुशासनों एवं अभिकरणों द्वारा शांति स्थापनापरक मानव पूंजी का निर्माण कर सकती है, क्योंकि सर्वविदित तथ्य है कि जिज्ञासा का समाधान, शिक्षा से होता है। करने के कौशल शिक्षा से प्राप्त होते हैं। जानने का माध्यम भी शिक्षा से प्राप्त होता है, अतः शांति और विकास की दिशा में जानने, होने, करने एवं बदलने के क्षेत्र में व्यक्ति, समूह, समाज एवं सरकार अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन करें तो, हमारी शिक्षा स्वतः स्वरूप में शांति व विकास का जामा पहन लेगी। इसके लिए हमें शांति और विकासयुक्त शिक्षा के समावेशी स्वरूप की स्थापना हेतु अग्रगामी कदम उठाने होंगे-

- शिक्षा के औपचारिक व अनौपचारिक अभिकरणों द्वारा शांति व विकासयुक्त शिक्षा के समावेशी स्वरूप के मूल्य, पाठ्यक्रम एवं

अनुसंधानों को न केवल दिशा देना बल्कि इस दिशा का अग्रगामी नेतृत्व करना।

- सरकार, शांति व विकासयुक्त शिक्षा के समावेशी स्वरूप को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक शैक्षिक-नीतियों का निर्माण करें, जो सामाजिक न्याय, समानता एवं एकात्मकता को बढ़ावा दें।
- शांति व विकासयुक्त शिक्षा का प्रचलन केवल स्कूली शिक्षा तक नहीं, बल्कि शिक्षा के सभी स्तरों, प्रशिक्षणों, सामाजिक तंत्रों, महिलाओं एवं आस-पास के सभी संगठनों तक प्रसारित व प्रतिस्थापित होना चाहिए।
- अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय विधिक एवं प्रशासनिक संगठनों द्वारा मानवाधिकार, लोकतंत्र, पर्यावरण बिगाड़, आर्थिक असमानता, सशस्त्र-द्वंद्वों के प्रति गारन्टीशुदा संरक्षणात्मक प्रबंधन के आयाम स्थापित करना।
- शांति व विकासयुक्त शिक्षा की पृष्ठभूमि में पर्यावरण, गरीबी, बेरोजगारी, मानवाधिकार, लोकतंत्र, परस्पर-निर्भरता जैसे घटकों पर भूमण्डलीकरणीय समझौते स्थापित करना।
- मीडिया द्वारा आर्थिक शोषण, हिंसा, राजनैतिक प्रभुता, लिंग-भेद, आदि मुद्दों को रेखांकित कर, इनके विरुद्ध जनता को जागरूक करते हुए, शांति व विकास की शिक्षाओं के प्रति सकारात्मक नज़रिया पैदा करना।
- गैर सरकारी संगठनों (NGO's) द्वारा स्वयं-सहायता समूह, सामाजिक न्याय, शांति, अवसरों की समानता, पारिस्थितिकी संतुलन एवं बंधुत्वता की दिशा में कार्य कर, शांति व विकास की शिक्षाओं को प्रबल समर्थन दिया जाए।

निष्कर्ष

आज सत्ता व विकास को हासिल करने की अन्धी दौड़ में दीर्घकालिक मानव-मूल्य प्रायः सभी देशों में पीछे छूट गये हैं। अनेक द्वंद्वों, प्रतियोगिताओं, होड़ एवं छदम विकास के मकड़जाल में उलझा आज का विश्व लगभग अशान्त-सहवास का प्रतिनिधित्व कर रहा है। इस संबंध में हमारे पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का यह कहना एकदम समीचीन है कि "हमारा सपना- लोग स्वच्छ-हरित पर्यावरण में रहें, निर्धनताहीन समृद्धि में जिएँ, युद्ध की आशंका से मुक्त, शांति में रहें, सबकी धरा, सबके लिए सुख-स्थली हो।"[8] कलाम साहब का यह स्वप्न अपने साकार रूप में शांति व विकास की शिक्षा के समावेशी स्वरूप का हिमायती है। वैसे भी अपने व्यापक मायने में शिक्षा-रूपी पद शांति व विकास का पर्याय है, अशांति व पिछड़ापन तो उसकी अनुपस्थिति के कारण ही पैदा होते हैं। इसलिए शांति व विकास की शिक्षा को एक संयुक्त विचारणीय मुद्दा बनाकर, इनकी समावेशी-शिक्षा को मंच देना, आज के युग की महती आवश्यकता है।

संदर्भ

1. *'अर्थशास्त्र और शांति के लिए संस्थान' (IEP),* देखें विकिपीडिया मुक्त विश्व कोश में.
2. लोढ़ा, जितेंद्र. 2011. *मूल्य शिक्षा का बालकों के व्यक्तित्व-विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन,* केंद्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत शोध-प्रायोजन्य, बी.टी.टी.सी., सरदार शहर (चुरू), राज., पृ. 3.
3. *"महात्मा गांधी शिक्षा, शांति एवं सतत् विकास संस्थान (MGIEP) युनेस्को"* के निदेशक डॉ. कबीर शेखर का साक्षात्कार (Website-www.unic.org.in).
4. लोढ़ा जितेन्द्र. 2008. शिक्षा आर्थिक विकास का सशक्त माध्यम, *प्रायमरी शिक्षक,* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली, वर्ष-27, अंक-3, जुलाई 2008, पृ. 24-30.
5. वही.
6. वही.
7. एन.सी.ई.आर.टी. 2002. *प्रायमरी शिक्षक,* नयी दिल्ली, वर्ष-27, अंक-31, जुलाई 2002, पृ.24-30.
8. आचार्य महाप्रज्ञ एवं ए.पी.जे. अब्दुल कलाम. 2009) *सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र,* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 196.